महिला शिक्षा– जनसंख्या नियंत्रण में अहम भूमिका

निधि अवस्थी,

गृहविज्ञान,
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,कानपुर

शोध सारांश

जनसंख्या वृद्धि रूपी इस समस्या का समाधान पारिवारिक जागरूकता लाकर ही किया जा सकता है भारत सरकार द्वारा यद्यपि दीर्घ कालिक जनसंख्या नियंत्रण के प्रयास किये जा रहे है परन्तु जनसंख्या समस्या में विशेष कमी नहीं आयी है महिलायें किसी भी देश की आबादी का आधा हिस्सा है किसी भी राष्ट्र की परम्परा और संस्कृति उस राष्ट्र की महिलाओं से परिलक्षित होती है। महिलायें समाज की रचनात्मक शक्ति होती है तथा पारिवारिक जीवन का आधार है यदि उनकी मांनसिकता में परिवर्तन होगा तो परिवार सीमित होगा इस लिये जनसंख्या नियंत्रण की समस्या का समाधान महिला षिक्षा व जागरूकता द्वारा ही होगा।

किसी भी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिये सबसे जरूरी तत्व शिक्षा है। यह ज्ञान और प्रकाश की अंतहीन यात्रा है जो मानवतावाद के विकास के लिए नये रास्ते खोलती है तथा ऐसे प्रबुद्ध नागरिकों का निर्माण करती है जो एक समृद्ध खुशहाल और मजबूत राष्ट्र की रचना करें। शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में मान्यता दी गयी है जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

महिला शिक्षा की चर्चा की जाती है तो स्पष्ट देखा जा सकता है कि इस सन्दर्भ में वांछित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाना शेष है, उन्हे सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक विकास प्रक्रिया में भगीदारी हेतु सक्षम करने की आवश्यकता है। वर्तमान में शिक्षा के महत्व को विस्तृत आयामों के सन्दर्भ में देखा जाने लगा है शिक्षा के माध्यम से ही महिलाओं की समाज में शक्ति, सम्मान व उपयोगी भूमिका में वृद्धि होगी। किसी भी समाज व राष्ट्र का विकास तभी सम्भव है जब उस समाज में महिलाओं व पुरूषों को समान अधिकार व अवसर प्राप्त हो। महिलाओं स्थिति की जाँच करने से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि यद्यपि कानूनी व सैद्धान्तिक सन्दर्भो मे उनके अधिकारों व अवसरों में कोई कमी नहीं है परन्तु व्यवहारिक स्वीकार्यता के सन्दभों में अभीष्ट लक्ष्य तक हम नहीं पहुँच सकें हैं। महिलाओं की स्थिति के आंकलन के कुछ प्रमुख सूचकांक इस प्रकार माने गये हैः–

- कार्यात्मक सहभागिता
- शिक्षा
- स्वास्थ्य
- जीवन अवधि
- सुरक्षा
- निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता आदि–आदि

भूतपूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने भी कहा है **"सामाजिक रूपान्तरण के लिए नारी शिक्षा को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जब**

महिलाओं को अधिकार प्राप्त होंगे तो एक स्थिर समाज उभरेगा।''

इसका परिणाम देश के अनेक समस्याओं के समाधान रूप में प्राप्त होगा, क्योंकि यदि देश की स्त्रियाँ शिक्षित व आत्म निर्भर होंगी तो वे अपने परिवार की सही तरह से देखभाल कर पायेंगी। अपने बच्चों को वे अच्छी शिक्षा प्रदान कर पायेंगी। क्योंकि महिलायें परिवार का केन्द्र बिन्दु हैं। बच्चे की प्रथम शिक्षिका उसका माँ ही होती है।

वर्तमान समय में देश की मुख्य चार समस्यायें हैं– जनाधिक्य, अशिक्षा, दरिद्रता, प्रदूषण। ये समस्याएँ एक दूसरे को स्वाभाविक रूप से सहयोग प्रदान करती हैं। इन समस्त समस्याओं में जनाधिक्य की समस्या सर्वाधिक विकराल है।

शिक्षा के प्रसार के बिना हम ना तो जनसंख्या की समस्या का समाधान कर सकते हैं और न ही समाज से गरीबी, बीमारी, पिछड़ापन जैसी समस्याओं का पूर्ण समाधान निरक्षरता को दूर किये बिना सम्भव है।

परिवार का निर्माण स्त्री–पुरूष दोनों मिलकर करते हैं व जनसंख्या वृद्धि के लिए भी दोनों उत्तरदायी है। किन्तु जनसंख्या नियंत्रण में सर्वाधिक सकारात्मक भूमिका महिलाओं की हो सकती है, क्योंकि बच्चों को जन्मदेना ही उनका कार्य नहीं है, अपितु बच्चे का पालन पोषण, शिक्षा तथा बच्चें के समस्त उत्तरदायित्व उन्ही के होते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं को इस बात के लिए प्रेरित किया जाये कि वे छोटे व सुखी परिवार की संकल्पना को समझ सकें तथा बार–बार के मातृत्व का उनके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा गर्भावस्था व धात्री अवस्था में अपने शरीर द्वारा एक बच्चे के पालन–पोषण के फलस्वरूप उनके शरीर में कौन से रोग लग सकते हैं। इसका ज्ञान उन्हें होना अत्यन्त आवश्यक है।

जवाहर लाल नेहरू जी ने भी कहा था **''भारत की महिलाओं पर गर्व है। मुझे उनके सौन्दर्य, आभा, आकर्षण, लज्जा, शालीनता, बुद्धिमत्त और त्याग की भावना पर नाज है। मैं सोचता हूँ कि यदि भारत की भावना का सही मायने में कोई प्रतिनिधित्व कर सकता है, तो वह भारत की महिलाएं हो सकती हैं, पुरूष नहीं।''**

सर्वेक्षण इस तथ्य की पुष्टि भी करते है कि, **''जिन राज्यों में स्त्रियों की साक्षरता दर अधिक है वहाँ की महिलायें अधिक जागरूक हैं तथा वहॉ जन्मदर कम है।''**

स्त्रियाँ स्वभाव से कोमल होती हैं। वे मातृत्व और प्रेम के गुणों के ओतप्रोत होती हैं। इस कारण समाज में शोषित भी होती हैं परन्तु समय में परिवर्तन के साथ आज उन्होंने अपने आपको पहचाना है। इसके लिए शिक्षा हर तरह सहायक हुई है।

गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा भी है– **''शिक्षा मानव जीवन की आवश्यकता है और शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है जिससे वह सत्य की खोज कर सकें।''**

जनसंख्या की जागरूकता के सम्बन्ध में लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की जनसंख्या नियन्त्रण के साधनों के प्रयोग के प्रति जागरूकता का अध्ययन, सीमित परिवार के महत्व का अध्ययन, छोटे परिवार के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन तथा जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ने वाली समस्याओं की स्वीकारिता का अध्ययन करने पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए।

तालिका संख्या–1 (अ) लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की परिवार नियोजन के साधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

लिंग	ग्रामीण परिवार 400													
	शिक्षित							शिक्षित						
	नहीं		अस्थाई		स्थाई		186	नहीं		अस्थाई		स्थाई		214
	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	N(%)	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	N(%)
महिला	65	51.18	34	26.77	28	22.05	127 (100)	126	72.83	18	10.41	29	16.76	173 (100)
पुरूष	33	55.93	14	23.73	12	20.34	59 (100)	28	68.29	6	14.63	7	17.08	41 (100)

तालिका संख्या–1 (ब) लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की परिवार नियोजन के साधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

लिंग	नगरीय परिवार 400													
	शिक्षित							शिक्षित						
	नहीं		अस्थाई		स्थाई		296	नहीं		अस्थाई		स्थाई		104
	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	N(%)	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	बारम्बारता	%	N(%)
महिला	118	54.13	94	43.12	6	2.75	218 (100)	43	61.43	15	21.43	12	17.12	70 (.100)
पुरूष	14	17.95	46	58.97	18	23.08	78 (100)	21	61.76	7	20.59	6	17.65	34 (100)

तालिका संख्या–2 : जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ने वाले समस्याओं की स्वीकार्यता के प्रति जागरूकता का अध्ययन–

जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ने वाली समस्याये	ग्रामीण शिक्षित (186) (भारित माध्य)	ग्रामीण अशिक्षित (214) (भारित माध्य)	नगरीय शिक्षित (296) (भारित माध्य)	नगरीय अशिक्षित (104) (भारित माध्य)
बढ़ते सामाजिक अपराध	0.71	0.66	0.90	0.81
घटती कृषि भूमि	0.92	0.81	0.90	0.79
बढ़ती प्रदूषण	0.82	0.70	0.94	0.69
सीमित होते आवास	0.94	0.86	0.89	0.69
पोषक आहार की कमी	0.97	0.83	0.99	0.90
मलिन बस्तियों का विस्तार	0.77	0.84	0.93	0.75
डगमगाती अर्थ व्यवस्था	0.82	0.72	0.92	0.54

तालिका संख्या–3 : जनसंख्या जागरूकता को प्रोत्साहित करने मे संचार साधनों के महत्व का अध्ययन

संचार	ग्रामीण शिक्षित (186) (भारित माध्य)	ग्रामीण अशिक्षित (214) (भारित माध्य)	नगरीय शिक्षित (296) (भारित माध्य)	नगरीय अशिक्षित (104) (भारित माध्य)
दृष्य–श्रव्य के कार्यक्रमों द्वारा	0.52	0.41	0.73	0.71
मुद्रित लेखों द्वारा	0.19	0.00	0.64	0.00
स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा	0.61	0.36	0.55	0.35

तालिका संख्या–4 : सीमित परिवर के महत्व के सम्बन्ध में परिवारों में दृष्टिकोण का अध्ययन

दृष्टिकोण	ग्रामीण शिक्षित (186) (भारित माध्य)	ग्रामीण अशिक्षित (214) (भारित माध्य)	नगरीय शिक्षित (296) (भारित माध्य)	नगरीय अशिक्षित (104) (भारित माध्य)
खुषहाली के लिए	0.77	0.58	0.86	0.90
शैक्षिक स्तर की उन्नति के लिए	0.85	0.62	0.92	0.85
स्वस्थ बच्चों के जन्म के लिए	0.82	0.64	0.91	0.75
परिवार के उचित पोषण के लिए	0.89	0.67	0.86	0.71

तालिका संख्या–5 : छोटे परिवार के प्रति अभिवृत्ति तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति परिवारों की अभिवृत्ति का अध्ययन

छोटे परिवार के प्रति अभिवृत्ति	ग्रामीण 400				शहरी 400			
	शिक्षित 186		शिक्षित 214		शिक्षित 296		शिक्षित 104	
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष
समान्तर माध्य	0.21	0.39	0.08	0.22	0.19	0.22	0.02	0.22
मनक विचलन	0.57	0.46	0.50	0.33	0.49	0.38	0.52	0.45

परिणाम

मैंने अपने शोधकार्य **''ग्रामीण व नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन''** में भी पाया कि जनसंख्या नियंत्रण के लिए महिलाओं की जागरूकता की अपेक्षा पुरूषों की जागरूकता अधिक है। ऐसा महिलाओं की स्थिति का पुरूषों से निम्न होना है तथा महिलायें प्रायः दुविधाग्रस्त और हिचकती भी हैं गर्भ ठहरने को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने में, क्योंकि इसमें महिलाओं को पारम्परिक संस्कार और मूल्य बाधा पहुँचाते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षित महिलाओं की परिवार सीमित करने व कम बच्चों के लाभागों के प्रति अशिक्षित महिलाओं से अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है तथा वे बच्चे के जन्म के फलस्वरूप बढ़ने वाले दायित्वों व अपने स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति भी अधिक सजग है। चूँकि महिलायें परिवार का केन्द्र बिन्दु हैं अतः उन्हें जनसंख्या नियंत्रण व उससे उत्पन्न सामाजिक प्रतिरोधों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है, तभी इस समस्या में कमी होगी।

यूनिसेफ की 2005 की रिपोर्ट के अनुसार **''बालिकायें अब भी बुनियादी षिक्षा से वंचित है तथा जो बालिकायें स्कूल नहीं जाती हैं, उनके एच0आई0बी0 संक्रमण का शिकार हो जाने और स्वस्थ्य परिवार का पालन पोषण न कर पाने की सम्भावनायें ज्यादा हैं।''**

इसीलिये महिला षिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। साथ ही उन्हें जनसंख्या नियंत्रण व छोटे परिवार के लाभों के प्रति शिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा हमें जागरूक, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बनाती है, जिससे हम व्यक्तिगत लाभों से ऊपर से उठकर सोचते हैं और सामाजिक लाभ को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखते हैं।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने भी महिलाओं की जनसंख्या शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि, **''परिवार नियोजन की शिक्षा स्त्रियों को अनावश्यक मातृत्व से बचाती है, देश को अनावश्यक जनसंख्या तथा भुखमरी से बचाती है। भारत जैसे भूखग्रस्त देश में और बच्चे पैदा करना न केवल इस बेकसूर बच्चों की मौत बुलाना है वरन् सम्पूर्ण परिवार एवं देश को निकृष्ट जीवन में डालना है। इस अन्याय को नहीं होने देना।''**

सुझाव

महिलाओं को जनसंख्या नियंत्रण के प्रति शिक्षित करने के सम्बन्ध में मेरे कुछ मुख्य सुझाव निम्न है:–

- शिक्षित अशिक्षित सभी महिलाओं को यह ज्ञान दिया जाये कि परिवार को सीमित करना उनके लिए कितना आवष्यक है व यह किस प्रकार उनके स्वयं के हाथ में है।
- इसके लिए व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान महिलाओं को कराया जाये।
- महिलाओं के स्वास्थ्य व पोषण के लिए उनके स्वास्थ्य, भोजन, अधिक मातृत्व के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति उनको शिक्षित किया जाये।
- महिलाओं के लिए खास कर युवा महिलाओं के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण, व्यवसाय प्रषिक्षण नीतियों का विकास और कार्यान्वयन किया जाये।
- जनसंख्या शिक्षा पर व्याख्यान मालाओं को आयोजन किया जाये, समाचार पत्र,

पत्रिकाओं रेडियों कार्यक्रम, चलचित्र माध्यमों से महिलाओं को जनसंख्या नियंत्रण के प्रति शिक्षित किया जाये।

- लघु कुटीर उद्योगों के स्थापना हेतु महिलाओं को शिक्षित किया जायें जिससे वे अधिक स्वतंत्रता प्राप्त कर अपनी सामाजिक स्थिति को उन्नत कर सके।
- क्षेत्रीय आधार पर सामाजिक संगठनों का निर्माण कर महिलाओं को जनसंख्या नियंत्रण के प्रति शिक्षित करने का प्रयास किया जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डा0 कलाम, ए0पी0जे0 अब्दुल–मेरे सपनों का भार–प्रभात पेपर बैक प्रकाशन, दिल्ली (2001)
- दुबे, पुष्पा श्री–जनसंख्या शिक्षण–विनोद प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7 (1995)
- मलैया, के0सी0–जनसंख्या शिक्षा–विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (2001)
- वघेल, डी0एस0, वघेल, किरण–जनांकिकी–विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली (2001)
- डा0 शर्मा, आर0एन0–जनसंख्या शिक्षा–आर0लाल बुक डिपो, मेरठ (2002)
- योजना ,सितम्बर 2004
- योजना, सितम्बर 2005
- कुरूक्षेत्र सितम्बर 2005
- शोध पत्र – यादव, वीरेन्द्र रस–जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन (2002)
- शोध पत्र– बाला, मंजू –जनसंख्या विस्फोट के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय संशोधन, भारतीय सामाजिक संरचना का विश्लेषण–कानपुर विश्वविद्यालय

Copyright © 2016 *Nidhi Awasthi*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.